दोहा संग्रह

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़ै वन माहिं,
ऐसे घटि घटि राम है, दुनिया देखे नाहिं ।।1।।
आज कहै कल्ह भजूँगा, काल कहै फिर काल
आज काल के करत ही, औसर जाती चाल ।।2।।
गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागु पाय,
बलिहारी गुरु आपणें जिन गोविंद दियो बताय ।।3।।

– कबीर

जो रहिम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।4।।
कह रहिम निज संग लै, जनमत जगत कोय
बैर, प्रीति, अभ्यास जस, होत होत ही होय ।।5।।

– रहीम

सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात
मनो नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात ।।6।।
कदली, सीप, भुजंग – मुख स्वाति एक गुन तीन,
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।।7।।

– बिहारी

शब्द		अर्थ
कस्तूरी	–	हिरन की नाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित पदार्थ
कुंडलि	–	वह हिरन जिसके शरीर पर चित्तियाँ हों
औसर	–	अवसर, मौका
कुसंग	–	बुरे मित्र
भुजंग	–	साँप
स्वाति	–	स्वाति नक्षत्र से गिरने वाली बूँद
बैर	–	शत्रुता
प्रीति	–	प्रेम
सोहत	–	सुशोभित होना
गात	–	शरीर
पट	–	वस्त्र
सैल	–	शिला
आतप	–	सूर्य की किरणें
तैसोई	–	वैसा ही

अनुशीलनी

भाव बोध और विचार :

१. **मौखिक:**

(i) कुछ दोहों को कंठस्थ कीजिए ।

(ii) बताइए कि इन में से किस दोहे में श्रीकृष्ण के रूप का वर्णन है ।

(ख) लिखित :

(i) कबीर कस्तूरी मृग की तुलना राम से किस प्रकार करते हैं ?

(ii) समय की उपयोगिता के बारे में कबीर के क्या उपदेश हैं ?

(iii) कबीर गुरु पर क्यों बलिहारी जाना चाहते हैं ?

(iv) अभ्यासवश किन गुणों का विकास होता है ?

(v) स्वाति नक्षत्र की बूँद कहाँ – कहाँ गिरकर क्या क्या रूप धारण करती है ?

२. भाषा बोध :

(क) निम्नलिखित दोहों को पूरा कीजिए :

(i) आज कहै कल्ह भजूँगा काल कहै फिर काल

(ii) जो रहिम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,

(iii) सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात,

(iv) कदली, सीप, भुजंग – मुख स्वाति एक गुन तीन

(ख) निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रस्तुत दोहों मे से किन किन दोहों की ओर संकेत करती है, बताइए :

(i) कस्तूरी मृग कस्तूरी की सुगंध से पागल हो जाता है और उसे ढूँढने लगता है ।

(ii) श्रीकृष्ण के श्याम शरीर पर पीला वस्त्र ऐसा लगता है जैसे नीलम के पत्थर के ऊपर धूप चढ़ी है ।

(iii) चंदन के वृक्ष में विषधर साँप लिपटा हो ।

(iv) गुरु गोविंद का परिचय देते हैं ।

(v) समय रहते ही उसका उपयोग करना चाहिए ।

(ग) इनके भाव को स्पष्ट कीजिए :

(i) मनो नीलमणि शैल पर आतप पर्‌यो प्रभात

(ii) जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।

(iii) चन्दन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुंजग

(iv) ऐसे घटि घटि राम है, दुनिया देखे नाहिं ।

(घ) इनके दो - दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

अग्नि, कमल, पृथ्वी, आकाश, नदी, वर्षा

(ङ) इनके मानक हिन्दी रूप लिखिए :

कल्ह -

औसर -

काके -

भुजंग -

कदली -

सैल -

गात -

मनो -